सोहनराजजी तातेड़ की 20 से 25 वर्ष उम्र (सन्1965 से 1970) तक की दिनचर्या एवं पाँच वर्ष का सफर

(1) सन् 1965 में 20 वर्ष की उम्र में मेरी शादी हो गई थी, जब मैंने इंजीनियरिंग कॉलेज में प्रवेश लिया ही था। शादीशुदा जीवन में सन् 1965 से 1970– 5 वर्ष तक स्वयं की इंजीनियरिंग की कठिन पढ़ाई के साथ पत्नी, दो भाईयों– ताराचन्दजी एवं ओमप्रकाशजी, शान्ति बहिन को पढ़ाना, 5 हायर सैकण्डरी के विद्यार्थियों को ट्यूशन पढ़ाना। पूरे 5 वर्ष प्रतिदिन 20 कि.मी. साईकिल चलाना (5 कि.मी. दूर इंजीनियरिंग कॉलेज थ्योरी, प्रेक्टिकल के लिये 2 बार जाना पड़ता था) वर्ष 1964 में हायर सैकण्डरी परीक्षा में पूरे राजस्थान में प्रथम स्थान होने के कारण बिना परिश्रम के भारत की विख्यात एम.बी.एम. इंजीनियरिंग कॉलेज में आसानी से प्रवेश मिल गया।

(2) स्वयं को मिलने वाली छात्रवृति से एवं ट्यूशन से वार्षिक रु. 5000 (पांच हजार) की कमाई करके स्वयं, पत्नी, भाई–बहिनों की पढ़ाई, भोजन–वस्त्र आदि खर्च निकालना। पूरे 5 वर्ष घर से खर्च नहीं मंगवाकर **"सेल्फ मेड"** बना। 5 सदस्यों के परिवार का पूरे 5 वर्ष राशन–सब्जी बाजार से स्वयं लाना। भाई–बहिन 8–10 वर्ष के छोटे ही थे।

(3) हम पति–पत्नी दोनों ने सन् 1965 से 67 दो वर्ष वैरागी का जीवन जीकर साधना की तथा सन् 1966 में दोनों दीक्षा के लिये सजोड़े तैयार हुए, परन्तु दीक्षा का योग नहीं था। मैंने 5 वर्ष में पूरी जैन विद्या का अध्ययन भी कर लिया।

(4) सन् 1965 में तातेड़ गेस्ट हाऊस, जोधपुर में जैन श्वे. तेरापंथी सभा का शुभारम्भ हुआ। मैं प्रथम मंत्री बना तथा तातेड़ गेस्ट हाऊस में पूरे 5 वर्ष धार्मिक कार्यक्रमों का संचालन किया तथा युवक परिषद् की सद्स्यता भी ले ली।

(5) 1969 में बी.ई. (मैकेनिकल) ऑनर्स अंको सें उत्तीर्ण होने के कारण रिजल्ट आते ही दूसरे दिन जुलाई 1969 में राजस्थान सरकार के पी.एच.ई.डी. विभाग में एसिस्टेन्ट इंजीनियर की गजेटेड नौकरी मिल गई। आगे चलकर 30 वर्ष तक इस विभाग में यह नौकरी की।